International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 545-549

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 545-549
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2017
Accepted: 28-12-2017

डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रतिमा कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

सर्वोदय के साधन : भूदान आन्दोलन

डॉ. प्रतिमा कुमारी

सारांशः
सर्वोदय का तात्पर्य स्वयं परिश्रम करके भोजन करना चाहिए। हमें दूसरों की कमाई नहीं खानी चाहिए, अपना भार दूसरे पर नहीं डालना चाहिए। विनोबा ने कहा कि सर्वोदय सार्वजनिक क्षेत्र में स्वच्छ और कुशल प्रशासन, सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था का आधार विकेन्द्रीकरण, सर्वोदय समस्त शक्ति जनता को प्राप्त होना, सर्वोदय अधिकारी वर्ग द्वारा अपने आपको जनता का स्वामी नहीं, वरन् सेवक समझना है।
सर्वोदय का आदर्श है, अद्वैत और उसकी नीति है, समन्वय। सर्वोदय ऐसे वर्गविहीन, जातिविहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह को अपने सर्वांगीण विकास के साधन और अवसर मिलेंगे। यह क्रान्ति अहिंसा और सत्य द्वारा ही संभव है। सर्वोदय इसी का प्रतिपादन करता है।
आदर्श सामाजिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्त्व करता है। इसका आधार सभी के लिए प्रेम है। इसमें बिना किसी अपवाद के सभी के लिए स्थान है, चाहे कोई युवराज हो या साधारण कृषक, हिन्दू हो या मुसलमान, सवर्ण हिन्दू हो या हरिजन, गोरा या काला, संत हो या पापी। किसी व्यक्ति या समुदाय को दबाने, शोषित करने या भंग करने का इसमें भाव ही नहीं है। सभी इस सामाजिक व्यवस्था में समान रूप में भागीदार होंगे, सभी अपने श्रम का प्रयोग करेंगे, सबल निर्बलों की रक्षा और उनके संरक्षक के रूप में कार्य करेंगे और सभी सबके कल्याण का कार्य करेंगे।

प्रस्तावनाः
वस्तुतः सर्वोदय एक ऐसी मानवतावादी विचारधारा है, जो मानव मात्र की सद्गुण सम्पन्नता में विश्वास करती है। इसका लक्ष्य समाज में मानवीय मूल्य की स्थापना है। मानवीय जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए हृदय परिवर्तन को आधार बनाया। भूदान आन्दोलन, सम्पत्ति दान, ग्रामदान को सर्वोदय के साधन के रूप में अपनाया गया है।
विनोबा भूदान यज्ञ का प्रारम्भ करते हुए कहा था कि व्यक्तियों के द्वारा स्वीकार कर लिया जाना चाहिए कि समस्त धरती ईश्वर की है। इस दान किये हुए भूमि से गरीबों व दीन–दुखियों की सेवा की जा सकेगी। अगर समस्त धरती पर सामाजिक रूप में स्वामित्व हो तो सारा असंतोष दूर हो जाएगा और प्रेम तथा सहयोग के युग का आगमन होगा। मैं चाहता हूं कि व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ में अपनी भूमि का कुछ भाग दान किया जाए। मनुष्य का कुछ नहीं है, यह प्रकृति प्रदत्त संसाधन के रूप में मनुष्य को प्राप्त हुआ है।

सर्वोदय सम्मेलन और भूदान–
भारत के दक्षिणी राज्य आन्ध्र प्रदेश में अप्रैल 1951 में सर्वोदय सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस समय आचार्य भावे तेलपाना में पंचमपल्ली स्थान पर ठहरे हुए थे। इस समय अनेक हरिजन और अन्य व्यक्ति आचार्य भावे से मिले और उन्हें अपनी भूमिहीनता के कष्ट सुनाए। यह घटना सर्वोदय आन्दोलन के इतिहास में क्रान्तिकारी सिद्ध हुई और इससे प्रेरित होकर आचार्य भावे ने भूदान यज्ञ प्रारम्भ किया। यहाँ के निर्धन भूमिहीन व्यक्तियों ने विनोबा भावे से 80 एकड़ जमीन माँग की तो इस महान् नेता ने वहां उपस्थित व्यक्तियों से पूछा कि क्या कोई व्यक्ति इतनी भूमि दे सकता है? सर्वोदय नेता की बात के उत्तर में पंचमपल्ली के ही रामचन्द्र रेड्डी ने तुरन्त 100 एकड़ भूमि का दान कर दिया। इस प्रकार 18 अप्रैल, 1951 को भूदान यज्ञ का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद पास के ही एक गांव में उन्हें 60 एकड़ भूमि की भेंट प्राप्त हुई।
विनोबा की बात का आंध्र प्रदेश की जनता ने सम्मान किया और उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि व्यक्तियों की अन्तरात्मा को परिवर्तित कर अहिंसक ढ़ समझा जाता था, आचार्य ने 51 दिन में 12,201 एकड़ भूमि प्राप्त की। यह अपने आप में एक बड़ी विजय थी और अब विनोबा ने भूदान में 50 मिलियन एकड़ भूमि प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया। इस आन्दोलन को आगे बढाने में विनोबा भावे का अकाट्य योगदान रहा है। भूदान आंदोलन की निम्न विशेषताएँ है–

न्याय और नैतिकता पर आधारित–

भूदान न्याय और नैतिकता के सिद्धान्त को अपनाने पर जोर देता है। इसके अन्तर्गत भूमि का दान दया के रूप में नहीं, वरन् इसलिए किया जाता है कि न्याय की यह मांग है भूदान नेता का विचार है कि समाज में पर्याप्त सद्भावना विद्यमान है, आवश्यकता केवल इस बात की है व्यक्तियों की सत्प्रवृत्तियों को विकसित किया जाए। इसको विकसित करके नैतिकता तथा न्याय की स्थापना की जा सकेगी।

प्रन्यास धारण–

भूदान सम्पत्ति और विशेषतया भू–सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रन्यास सिद्धान्त को मानता है। यह विश्वास करता है कि समस्त भूमि ईश्वर की है और मानव इस पर प्रन्यासी के रूप में ही अधिकार रखते हैं।

नवीन दृष्टिकोण का जन्म–

नवीन दृष्टिकोण को अपनाकर भूदान में सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं में परिवर्तन लाया जा सके। भूदान भूमि के अन्तिम स्वामित्व के प्रश्न को हल करेगा। एक व्यक्ति को केवल उतनी ही भूमि अपने पास रखने का अधिकार हो सकता है, जितनी कि उसे आवश्यकता है और अपनी आवश्यकता से अतिरिक्त भूमि उसे समाज को लौटानी होगी। भूदान यज्ञ के निर्धन किसानों से भी भूमि दान के रूप में प्राप्त की जाती है, जिससे सबके विचारों में परिवर्तन लाया जा सके। भूदान की विशेषता यह है कि इसके द्वारा दबाव या विनाश के आधार पर नहीं, वरन् हृदय परिवर्तन के आधार पर आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया जाएगा। भारत के महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ राधाकृष्णन् ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में भूदान को 'सहमति से क्रान्ति' की संज्ञा दी है।

सम्पत्ति दान–

विनोबा के अनुसार नकद राशि अनेक समस्याओं को जन्म देती है। यही हमारे देश के पतन का प्रमुख कारण रहा है। किंतु उनके विचार में परिवर्तन हुआ और उन्होंने सोचा कि बीज–खाद और पशु खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है अतः अनुभव के आधार पर उन्होंने अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और नवीन दृष्टिकोण से सम्पत्ति दान या धन की भेंट की धारणा को जन्म दिया।

23 अक्टूबर 1952 को पाटलिपुत्र नगर में उन्होंने सम्पत्ति दान आंदोलन प्रारम्भ करते हुए कहा कि सम्पत्ति दान, भूदान यज्ञ की पूर्ति के लिए आवश्यक है। इस आन्दोलन के अन्तर्गत उन्होंने व्यक्तियों से अपनी आय का षष्ठांश दान में देने की अपील की।

ग्रामदान और ग्रामराज–

भूमिदान के अलावा विनोबा ग्रामदान और ग्रामराज पर बल दिया जिसका तात्पर्य है एक पूरे गांव की भेंट प्रदान करना। प्रारम्भ में व्यक्तिम अपनी भूमि का एक टुकड़ा देंगे किंतु अन्त में वे अपनी सारी भूमि दे देंगे। इस ग्रामदान के आधार पर ग्रामराज की स्थापना की जाएगी जब ग्रामदान होगा, तो भूमि पर किसी का भी व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहेगा और समस्त समुदाय को सामूहिक रूप से भूमि पर अधिकार प्राप्त होगा।

ग्रामदान आन्दोलन 1952 में उत्तर प्रदेश के मानग्रोथ गांव के समस्त निवसियों द्वारा अप्रत्याशित रूप से अपना ग्राम दान करने के साथ आरंभ हुआ। इसके बाद उड़ीसा में 20 जनवरी, 1953 को कटक जिले में मानपुर पहला ग्राम था, जिसे दान के रूप में दिया गया। इसके बाद यह आन्दोलन कोरपुट जिले में फैला और 23 जनवरी, 1955 को विनोबा द्वारा उड़ीसा में प्रवेश करने पर 26 ग्राम दान के रूप में प्राप्त किए गए। जिस प्रकार गांधी ने पंचायती राज व्यवस्था पर बल दिया था, उसी प्रकार आचार्य विनोबा भावे ने ग्रामराज पर बल दिया।

ग्रामराज के लक्षण–

ग्रामराज के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं–

1. हिंसा और दमन के लिए ग्रामराज में कोई स्थान नहीं होगा बल्कि अहिंसा के लिए स्थान होगा। इसमें शक्ति का केन्द्रीकरण नहीं वरन् गांवों के माध्यम से शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा, जिनमें प्रत्येक गांव पूर्ण और अपने आप में एक लघु राज्य होगा। प्रत्येक गांव में एक सामान्य ग्राम परिषद् होगी, जिसमें प्रत्येक परिवार अपना एक प्रतिनिधित्व भेजेगा। इस प्रकार अहिंसक ढंग से समाज की व्यवस्था का संचालन किया जाएगा। यह व्यवस्था ग्राम का समुचित विकास कर सकती है।
2. इसमें यह भी प्रावधान है कि उच्च के द्वारा निर्धन का शोषण नहीं होगा। इसमें प्रतिस्पर्द्धा नहीं, वरन् पारस्परिक सहयोग और समन्वय होगा। ग्रामराज में कोई राजनीतिक दल भी नहीं होंगे और राजनीति का स्थान लोकनीति अर्थात् व्यक्तियों के कल्याण की प्रवृति के द्वारा ले लिया जाएगा।
3. परिवार की उन्नति में जिस प्रकार सभी सदस्यों का योगदान होता है, उसी प्रकार ग्रामराज में सभी व्यक्ति समस्त समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करेंगे। प्रत्येक कृषक भूमि के एक टुकड़े पर कार्य करेगा। सभी के द्वारा आवश्यकतानुसार एक–दूसरे की सहायता की जाएगी। ग्रामराज में समस्त समुदाय सुखी होगा। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ आपसी सद्भाव व भाईचारे का भाव रखेगा, एक व्यक्ति दूसरे का शोषण नहीं करेगा। इस समुदाय में संग्रह की प्रवृति नहीं होगी और मेरे–तेरे की भावना का अन्त हो जाएगा। वर्तमान समय में व्यक्ति जिस प्रकार से स्वयं के लिए जीता है और अपनी योग्यताओं का अपने लिए ही प्रयोग करता है, ग्रामराज में प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यताओं का सामान्य कल्याण में प्रयोग करेगा। एम. चौधरी के शब्दों में, प्रत्येक अपना सर्वस्थ समुदाय को प्रदान कर देगा।
4. इसमें स्वतंत्रता समानता और आपसी भाई–चारे का वातावरण होगा क्योंकि इसमें राजनीतिक दल, जमींदार या पूंजीपतियों जैसे शोषण तत्त्व नहीं होंगे। स्वशासित ग्रामीण समुदायों में जनता सम्प्रभु होगी। व्यक्ति वर्ग और जाति की भावनाओं से भी पूर्णतया स्वतन्त्र होंगे। ग्रामराज में सभी व्यक्तियों को धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त होगी और धर्म या जाति के आधार पर कोई भी भेद–भाव नहीं किया जाएगा।

भूदान, सम्पत्ति दान ग्रामदान और ग्रामराज के अतिरिक्त सर्वोदय आन्दोलन के कार्यक्रम के अर्न्तगत बुद्धिदान, श्रमदान, साधनदान और जीवनदान आदि को भी अपनाया गया। इसका कारण यह है कि समाज के उत्पादन में इन सभी का किसी न किसी रूप में योगदान अवश्य होता है। जीवनदान का तात्पर्य यह है कि जीवनदान करने वाले व्यक्ति अपनी समस्त बुद्धि श्रम और शक्ति का प्रयोग भूदान एवं सर्वोदय की सेवा में करेंगे।

सर्वप्रथम जयप्रकाश ने अप्रैल 1954 में सर्वोदय को अपना जीवन दान दिया। तत्पश्चात् विनोबाजी ने भी भूदान यज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति के लिए अपना जीवन दान दिया। विनोबा की प्रेरणा से प्रभावित होकर कई सर्वोदयी आन्दोलन के समर्थकों ने भी अपना जीवनदान देने की बात की।

सर्वोदयी विचारधारा और कार्यक्रम का मूल्यांकन–

सर्वोदय के गुण–

सर्वोदय के गुण निम्न हैं–

सर्वोदय समस्त मानव जाति के लिए–

सर्वोदय समस्त मानव जाति के लिए है न कि किसी एक देश व काल के लिए। विनोबा भावे लिखते है, सर्वोदय भारत का अपना शब्द है और भारत की अपनी वस्तु है, पर ऐसा शब्द या सही वस्तु नहीं है जो किसी दूसरे देश या काल में लागू न हो सके। देशकाल परिस्थिति के भेदानुसार उसकी बाहरी पद्धति में अन्तर होता रहेगा, लेकिन उसका आन्तरिक रूप शाश्वत रहेगा। सर्वोदयी विचारधारा तो जीवन के चिरन्तन मूल्यों पर आधारित होने के कारण शाश्वत महत्त्व की विचारधारा है।

उच्च आदर्श–

इसमें उच्च आदर्श व शांतिपूर्ण रहने के तरीके पर बल दिया गया है। सर्वोदय का आदर्श महान् है और सर्वोदय के उस आदर्श का अपना महत्त्व है। इस सम्बन्ध में सर्वोदयी विचारक कृष्णदत्त भट्ट ने लिखा है कि सबका उदय कोरा स्वप्न, कोरा आदर्श नहीं है यह वह आदर्श व्यवहार है जिसे अमल में लाया जा सकता है। सर्वोदय का आदर्श ऊँचा है, यह ठीक है, परन्तु न तो वह अप्राप्य है और न असाध्य है, वह प्रयत्न साध्य है।

सामान्य कल्याण का एक साधन–

सर्वोदय में सेवा भावना की झलक दिखलाई पड़ती है। सर्वोदय सत्ता और शोषण की राजनीति का विरोध करता है। इसके अन्तर्गत राज्य, सत्ता और शोषण का नहीं वरन् सेवा का एक साधन होगा। ग्रामराज अहिंसा पर आधारित है ओर सर्वोदय में सभी के हित की भावना निहित है। भूदान, सम्पत्ति दान और ग्रामदान ये पद्धतियां हृदय परिवर्तन के नैतिक साधन के रूप में हैं। सर्वोदय की भावना को ग्रहण कर लेने पर धनी और गरीब सभी निजी सम्पत्ति के प्रति मोह का त्याग कर देंगे, इससे समाज का कल्याण हो सकता है।

नवीन सामाजिक और आर्थिक मूल्य–

सामाजिक और आर्थिक मूल्यों के विकास पर सर्वोदय बल देता है। इसमें व्यक्ति सभी के हित के लिए कार्य करेंगे। और समस्त समुदाय में पारस्परिक भावना होगी। इस प्रकार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र का समस्त ढांचा पूर्णतया परिवर्तित हो जाएगा।

भूदान भूमि–सुधार में सहायक–

भूदान आन्दोलन के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे ने इस आन्दोलन के अलावा ग्रामदान व भूदान इन दोनों आन्दोलनों का भी संचालन किया। इनके कार्यक्रमों ने एक ऐसा वातावरण तैयार किया जिसके आधार पर भू–स्वामित्व की व्यवस्था में कानूनी ढंग से सुधार किया जा सके। इस योगदान के विषय में पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम जो इस आन्दोलन का निकला, वह उसके द्वारा निर्मित वातावरण का है, जो भूमि व्यवस्था में सुधार के लिए कानून बनाने में सहायक होता है, लेकिन उस विषय में यह व्यक्तियों के मानस को ही बदल देता है। भूमि सुधार के लिए कानून आवश्यक है लेकिन जनता के मानस को बदलना मूलतः उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए यह आन्दोलन अधिक महत्त्वपूर्ण है।

व्यवहार में सर्वोदयी समाज की स्थापना बहुत अधिक कठिन होते हुए भी विश्व सर्वोदयी विचारकों के प्रति इस बात के लिए कृतार्थ है कि उन्होंने मानव जाति के सम्मुख ऐसे महान् आदर्श रखे, जिनकी ओर बढ़ने का प्रयत्न विश्व के द्वारा किया जाना चाहिए। इस आदर्श को अपनाकर इसके लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

सर्वोदय के दोष–

सर्वोदयी विचारधारा और कार्यक्रम के प्रमुख रूप से निम्न दोष बतलाए गये हैं–

एक ही देश में सर्वोदय को अपनाना संभव नहीं–

सर्वोदय समाज के विकास हेतु सम्पूर्ण विश्व को ध्यान देना होगा। किसी एक देश में सर्वोदय को अपनाना संभव नहीं है। जिनकी सर्वोदय से कोई संगति नहीं है एक ही राज्य में सर्वोदयी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। जब तक विश्व के सभी राज्य में सर्वोदय के विचार को स्वीकार न कर लें, भारत ज ैसे एक ही राज्य में सर्वोदयी समाज की स्थापना की आशा बहुत अधिक धूमिल है। प्रश्न यह है कि जब हिंसा पर आधारित किसी वर्तमान राज्य के द्वारा सर्वोदयी समाज वाले किसी राज्य पर आक्रमण किया गया तो स्थिति क्या होगी?

दल प्रणाली, निर्वाचन व्यवस्था, लोकतन्त्र और राज्य की आलोचना उचित नहीं–

वर्तमान, लोकतंत्र में दल प्रणाली को सर्वोदयी विचारक सही नहीं मानते थे। ये लोग जनता पर अत्याचार करते हैं। अतः इस तथाकथित लोकतन्त्र को समाप्त कर एक दलविहीन प्रजातंत्र और राज्यविहीन समाज की दिशा में आगे बढने की चेष्टा की जानी चाहिए। लेकिन उनकी यह धारणा व्यावहारिक नहीं है। दलविहीन प्रजातंत्र शब्द सुनने में अच्छा लगता है लेकिन व्यवहार में राजनीतिक दल ही वे एकमात्र साधन है, जिनके आधार पर लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है। इसके अतिरिक्त राज्यविहीन समाज में कैसी व्यवस्था रखी जाए इस पर भी सर्वोदय कोई जवाब नहीं दे सका है।

सर्वोदय की धारणा व्यावहारिक नहीं–

सर्वोदय को व्यावहारिक रूप में नहीं अपनाया जा सकता। सर्वोदय का आदर्श निश्चित रूप से बहुत अधिक उच्च है और सैद्धान्तिक दृष्टि से उनमें कोई दोष नहीं बतलाया जा सकता, लेकिन विश्व की जो वास्तविक स्थिति है उसके अन्तर्गत महात्मा गांधी और अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिपादित इन महान आदर्शो के आधार पर समाज की रचना लगभग असंभव ही है। मानवीय प्रकृति जैसा कि हम वर्तमान समय में देखते हैं, स्वार्थ मोह और लगाव की भावना को छोड़ने में असमर्थ हैं और ऐसी स्थिति में अहिंसा तथा पूर्ण सहयोग की भावना पर आधारित समाज की स्थापना संभव प्रतीत नहीं होती। हम नैतिकता के उस धरातल तक नहीं पहुँच सके हैं, कि कानून की सहायता के बिना एक पूर्ण अहिंसक क्रान्ति सफल हो सके। विश्व में अब तक कभी भी ऐसे समाज की स्थापना नहीं हो सकी है जिसमें सभी व्यक्ति ऐसा सोचें कि वे एक ही परिवार के सदस्य हैं।

यह सिद्धान्त बहुत अधिक कल्पनात्मक है और इसमें बहुत अधिक संदेह है कि उन्हें इस धरती पर प्राप्त किया जा सकता है। यदि भारत को भी उदाहरण रूप में माना जाए तो अधिकांश व्यक्ति न तो अपने नैतिक कल्याण के प्रति उत्सुक हैं और न ही सही अर्थो में अपने भौतिक कल्याण के प्रति। बहुत से ऐसे पहलू हैं, जिस कारण इस आन्दोलन में दोष व्याप्त हैं।

हृदय परिवर्तन बहुत कठिन–

आज के लोगों में स्वार्थ की भावना व्याप्त है जबकि सर्वोदय समाज हृदय परिवर्तन पर आधारित है। महात्मा गांधी और विनोबा भावे जैसे महान् व्यक्ति उन थोड़े से व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन तो कर सकते हैं जो उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क और प्रभाव में आते हैं लेकिन सामान्य मिट्टी के बने व्यक्ति न तो स्वंय निःस्वार्थी हो सकते हैं और न दूसरों को निःस्वार्थी बना सकते हैं। महान् बौद्धिक और प्रशासनिक क्षमताओं या अन्य प्रकार के व्यक्तियों की खोज कठिन नहीं है, किंतु पूर्णतया निःस्वार्थी व्यक्तियों की खोज, जो प्रतिक्षण सर्वोदय का ही ध्यान रखते हों, निश्चित रूप से बहुत अधिक कठिन है।

भूदान के आधार पर भूमि समस्या का समाधान संभव नहीं–

सर्वोदय कार्यक्रम का सबसे प्रमुख अंग भूदान है और इसके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि भूदान भूमि समस्या का कोई हल प्रस्तुत नहीं करता है।

1. यद्यपि यह उचित नहीं है कि जिन व्यक्तियों द्वारा अपनी भूमि दान में दी गयी, उन व्यक्तियों के मूल उद्देश्य पर शंका की जाए, किंतु यह एक तथ्य है कि भूदान के अन्तर्गत अनेक मामलों में संदिग्ध उपयोगिता वाली भूमि दान में दी गयी। ऊसर व बंजर भूमि को भी भूदान किया। जिस पर स्वामित्व सम्बंधी विवाद चल रहा था।
2. यह आरोप लगाया जाता है कि जिन व्यक्तियों ने भूदान किया, उन्होंने हृदय परिवर्तन के कारण नहीं वरन् साम्यवादियों के आतंक और भय के कारण भूदान किया।
3. यह कहा जाता है कि यदि यह आन्दोलन सफल होता है तो इससे भूमि के छोटे–छोटे टुकड़े हो जाएंगे जिससे न केवल समाज वरन् राष्ट्रीय अर्थ–व्यवस्था को भी अत्यधिक क्षति पहुंचेगी।
4. भूदान के सम्बन्ध में सत्य रूप में यह कहा जाता है कि इसके आधार पर होने वाले परिवर्तन की गति बहुत धीमी होती है। राममनोहर लोहिया ने इस सम्बन्ध में कहा था कि यह कार्यक्रम बहुत अच्छा है परन्तु इससे 300 वर्ष में कार्य पूरा होगा। इसकी सबसे बड़ी कमी थी, इसमें गरीबों से भी भूमि को दान के रूप में लिया जाता था।

आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आन्दोलन में 5 करोड़ एकड़ भूमि दान में प्राप्त करने का संकल्प लिया गया था परन्तु मात्र 10 प्रतिशत ही भूमि दान के रूप में मिल सकी। स्वयं विनोबा जी ने भी 1970 के बाद अपने भूदान और ग्रामदान कार्यक्रम की असफलता को स्वीकार करते हुए 1970 के बाद से ही पवनार आश्रम में संन्यास लेकर अपने आप को आश्रम की सीमा में ही रखना ग्रहण कर लिया है। इस प्रकार भूदान तथा ग्रामदान के कार्यक्रमों को अर्धविराम तो लग ही गया है।

इस आन्दोलन पर भी लोगों ने तरह–तरह के सवाल उठाना प्रारम्भ कर दिये थे। सर्वोदय के सम्बन्ध में मूल प्रश्न यह है कि सर्वोदय के परिणाम स्वरूप व्यक्ति सुखी होंगे और पृथ्वी पर स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृत्व से पूर्ण स्वयं की स्थापना होगी, इस बात पर विश्वास किया जा सकता है। किंतु प्रश्न यह है कि इस सर्वोदयी समाज की स्थापना किन साधनों के आधार पर संभव है, जब तक वास्तविकताओं को बिल्कुल ही भुला दिया जाए, इसका निष्पक्ष उत्तर देना बहुत कठिन कार्य है।

सर्वोदय में नवीनतम प्रवृत्तियां डाकुओं का आत्मसमर्पण और जन आन्दोलन सर्वोदय मूलभूत रूप में हृदय परिवर्तन का दर्शन है और इस क्षेत्र में भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् 1948–49 से लेकर 1960 तक सर्वोदय ने सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रम को ही अपनाया और राजनीतिक तथा उसके सभी रूपों की पूर्णतया अपेक्षा की गयी लेकिन 1970 के बाद जब सर्वोदयी कार्यक्रम पर मनन और उसके मूल्यांकन का अवसर आया तो कुछ सर्वोदयी नेताओं ने अनुभव किया कि राजनीति की उपेक्षा करने से जीवन पर राजनीति का प्रभाव समाप्त नहीं हो जाता है और राजनीति की अपेक्षा सर्वोदय आन्दोलन की आंशिक सफलता का ही कारण बनी है।

इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि भूदान और ग्रामदान आन्दोलन का प्रारम्भ जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया था, वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सका। ऐसी स्थिति में अनेक सर्वोदयी नेताओं ने यह सोचा कि किसी न किसी रूप में राजनीति दलीय राजनीति नहीं, वरन् जन राजनीति में भाग लेकर राजनीति को स्वस्थ दिशा प्रदान करने की चेष्टा प्रदान की जानी चाहिए।

सर्वप्रथम गोपाराजू रामचन्द्र राओ, जिन्हें गोरा के नाम से पुकारा जाता है ने 9 मई, 1971 को नासिक में सर्वोदय समाज के उन्नीसवें अधिवेशन में इसी चिन्तन को अपनाया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि सर्वोदय आन्दोलन का अराजनीतिक दृष्टिकोण ही इसे जीवन की मुख्य धारा से पृथक करने के लिए उत्तरदायी है और आन्दोलन को सुदृढ बनाने के लिए राजनीति में भाग लेने की आवश्यकता है।

इन्होंने आगे कहा है कि यदि हमने राजनीतिक दृष्टिकोण से सोचा होता तो हम विकेन्द्रकरण को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू कर सकते थे और लाभकारी ढंग से सरकार को लोगों के नियन्त्रण में रख सकते थे। हमारी राजनीति के प्रति उदासीनता ने राजनीतिक शक्ति को व्यावसायिक राजनीतिज्ञों के हाथों में सौंप दिया है। ग्रामदान आन्दोलन सिद्धान्त रूप में अच्छा होते हुए भी राजनीतिक पूरक की कमी के कारण इसमें विशेष प्रगति नहीं हो सकी। जन आन्दोलन के कारण राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरता दिखायी देने लगी। देश में आपातकाल घोषित किया गया।

यद्यपि सर्वोदय सामान्यतया इस प्रकार की राजनीतिक घटनाओं पर टिप्पणी नहीं करता, लेकिन आपातकाल में भारतीय राजनीति की दूषित प्रवृत्तियों को जिस प्रकार से नियंत्रित किया गया, उससे प्रभावित होकर भावे ने आपातकाल को अनुशासन पर्व की संज्ञा दी। आपातकाल की इस स्थिति को सर्वोदय अधिक समय तक जारी रहने के पक्ष में नहीं था। इस दृष्टि से सर्वोदय की चेष्टा है कि भारत में पुनः सामान्य राजनीतिक स्थिति स्थापित हो जाए। सर्वोदय की चेष्टा है देश में निर्दलीय बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा राजनीतिक और सामाजिक जीवन में अधिक निष्पक्ष और अधिक सक्रिय भूमिका निभाई जानी चाहिए। सर्वोदयी समाज निष्पक्ष व आदर्श समाज की स्थापना पर बल देता है।

प्रमुख सुझाव–

गांधी के सर्वोदय दर्शन को और अधिक प्रभावी एवं व्यावहारिक बनाने के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्न सुझाव दिये जा सकते है–

1. सर्वोदय का क्षेत्र एक देश विशेष नहीं बल्कि वैश्विक होना चाहिए अर्थात् विश्व के सभी राज्यों में सर्वोदय के विचार को स्वीकार किया जाना चाहिए।
2. सर्वोदयी विचारकों को लोकतंत्र, दलीय प्रणाली तथा निर्वाचन व्यवस्था की आलोचना छोड़कर वर्तमान समय में इनका समर्थन करना चाहिए।
3. यद्यपि सर्वोदय का आदर्श उच्च है किन्तु व्यावहारिक रूप से इसे अपनाना कठिन है? इसलिए इसकी पूर्ण अपेक्षा की जगह जहां तक व्यावहारिक स्तर पर इसे अपनाना संभव हो, अपनाना चाहिए।
4. लोगों का सर्वोदय के लिए हृदय परिवर्तन करना कठिन है किन्तु शिक्षा के माध्यम से ऐसे विचार व्यक्ति में बचपन से ही डाले जाने चाहिए।
5. आज भूदान की जगह सम्पत्तिवान् लोगों से सबकी भलाई के लिए उनकी सम्पत्ति में से कुछ सम्पत्ति का दान करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष–

भारत में भूदान आन्दोलन को आगे बढाने में विनोबा भावे का नाम प्रमुख है। भारत में भूदान यज्ञ के द्वारा हम आर्थिक और राजनीतिक दोनों तरह के विकेन्द्रीकरण को और इन दोनों प्रकार के केन्द्रित शक्तियों को समाप्त करना चाहते हैं। भूदान यज्ञ के द्वारा हम उत्पादन का मुख्य साधन जमीन जन–जन के हाथ में पहुंचा देते हैं। आर्थिक केन्द्रीकरण यह कार्य यज्ञ में मिली हुई जमीन के बंटवारे के हमारे तरीके से और उसके बाद गांव में हम जो व्यवस्था कायम हुई देखना चाहते हैं उससे होता है। भूमिदान यज्ञ के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की समस्या का समाधान मिलजुलकर करना चाहिए। भूदान के सम्बन्ध में जयप्रकाश नारायण ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है कि– यह आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति लाने का गांधीवादी मार्ग है, यह नवीन जीवन

का सिद्धान्त और व्यवहार है, वह एक नवीन सामाजिक दर्शन है, यह एक नवीन मानवता तथा एक नवीन सभ्यता का सूत्रपात है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची–

1. राजनीति से लोकनीति की ओर : आचार्य बिनोवा भावे, अखिल भारत सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, जनवरी– 1957
2. क्रान्ति का अगला कदम : दादा धर्माधिकारी, अखिल भारत सर्व–सेवा–संघ प्रकाशन, 1955
3. हिमालय की यात्रा : दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर, जनजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद, जून–1948
4. हर्ष, हरदान, गांधीः विचार और दृष्टि : श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1996
5. चौहान, संदीप सिंह, भारत में दलित चेतना, आर बी एस ए पब्लिशर्स, जयपुर, 2004
6. यादव, डी.एस., गांधी दर्शन : विविध आयाम, आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2012
7. चन्देल, धर्मवीर, गांधी चिन्तन के विभिन्न पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012
8. गिरी, राजीव रंजन, गांधीवाद रहे ना रहे, अनन्या प्रकाशन, दिल्ली, 2018,